

प्रलेख रहित ग्रन्थालय की अवधारणा : एक परिचय

डॉ० राज कुमार सिंह

पुस्तकालयाध्यक्ष लालता सिंह राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय अदलहाट, मीरजापुर, उ० प्र०, भारत.

सारांश ऐतिहासिक स्रोतों से ज्ञात होता है कि ग्रन्थालय की अवधारणा का विकास उन कुछ संग्रह प्रिय विचारकों/शासकों तथा सामन्तों के प्रयासों से हुआ जो कि आवश्यक सूचनाओं तथा औषधियों के नाम आदि को ताम्रपत्र आदि पर अंकित कर संग्रह किया करते थे। कागज के आविष्कार से लेखन की दिशा में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ तथा ताम्रपत्रों आदि का स्थान कागज के पलिन्दों ने ले लिया। प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार ने इसे क्रान्तिकारी दौर में पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया और सम्भवतः इस प्रकार ग्रन्थ का वर्तमान स्वरूप सामने आया।

ऐतिहासिक धरोहरों के रूप में ग्रन्थ नित नये रूपों में हमारे सामने आ रहा है। इसका मूल कारण संग्रह की भावना का विकास एवं नई तकनीकियों का आगमन रहा जिसने इन लेखों को सुरक्षित तथा सुव्यवस्थित रखने में सहायता की। इस संग्रह की भावना ने ही ग्रन्थालय जैसी महत्वपूर्ण संस्था को जन्म दिया तथा समय के साथ-साथ इसमें नवीनता आती गयी और आज यह अपने उन्नति के चरम बिन्दू की ओर अग्रसर है जहाँ ग्रन्थों के रूप में कागज के विशालकालय भण्डारों के स्थान पर इलेक्ट्रॉनिक सूचना स्रोतों यथा—प्लामी, सी.डी., डी.वी.डी. (Floppy, CD, DVD) आदि नये रूप सामने आ रहे हैं परिणामस्वरूप प्रलेखों रहित ग्रन्थालय की अवधारणा का विकास हो रहा है।

पस्तावना

अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition)

ग्रन्थालय शब्द जब भी सामने आता है तो साथ ही आता है ग्रन्थों का एक विशाल भण्डार अर्थात् कागज से निर्मित पाठ्यसामग्री के विभिन्न रूप से जिसके बिना कुछ समय पहले तक हम ग्रन्थालय की कल्पना नहीं कर सकते थे। परन्तु आज सूचना तकनीक ने ग्रन्थालय के स्वरूप में ही आमूलचूल परिवर्तन ला दिया है। कम्प्यूटर और उन्नत शिक्षित समाज के विकास के साथ ही ग्रन्थालय आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक युग में आर्थिक प्रलेखिय सेवा उपलब्ध कराने के स्थान पर अधिक सूचना उपलब्ध कराने का कार्य करने लगे हैं।

प्रलेख रहित ग्रन्थालय से आशय कम्प्यूटर तथा संचार तकनीक जिसको कम्प्यूनिकेशन (Communication) कहा जाता है के माध्यम से सूचना का आदन— प्रदान जिसमें ग्रन्थालयों एवं सूचना केन्द्रों को आपस में जोड़ने अर्थात् नेटवर्किंग द्वारा सूचना का उपयोक्ताओं तक पहुँचाने का कार्य किया जाता है से है। यह ग्रन्थालय भविष्य के ग्रन्थालय कहे जा सकते हैं जो कि इलेक्ट्रॉनिक सूचना केन्द्र के रूप में विकास की ओर अग्रसर हैं। यह ग्रन्थालय अभी निर्माण की प्रक्रिया में हैं और इसे मूर्त रूप में लाने के प्रयास किये जा रहे हैं। इलेक्ट्रॉनिक बुक्स (E-Books) एवं इलेक्ट्रॉनिक जर्नल्स (E-Journals) प्रलेख रहित ग्रन्थालय की अवधारणा के विकास के प्रथम चरण कहे जा सकते हैं।

शेरवेल (Sherwell, 1977) के अनुसार एक वर्चुअल ग्रन्थालय (Virtual Library) के प्रमुख लक्षणों में

- पाठ्यसामग्री भौतिक संग्रह (ग्रन्थों, पत्रिकाओं) के रूप में नहीं होती है।
- प्रलेख (सूचना) इलेक्ट्रॉनिक रूपों (Electronic Format) में उपलब्ध होते हैं।
- प्रलेखों (सूचना) का संग्रह किसी एक स्थान पर नहीं होता है।
- प्रलेखों (सूचना) की प्राप्ति किसी भी कार्य स्थान से की जा सकती है।
- प्रलेखों (सूचना) की प्राप्ति तथा प्रसार उपयोक्ताओं की आवश्यकता के अनुसार किसी भी समय किया जा सकता है।
- प्रलेखों (सूचना) की खोज तीव्र तथा प्रभावी होती है।

पावेल (Powell, 1994) के अनुसार एक डिजिटल ग्रन्थालय (Digital Library) वह है जिसमें—

- सूचना सामान्य रूप से ग्रन्थों, पत्रिकाओं आदि की भौतिक उपस्थिति में नहीं होती है। ग्रन्थालय उपयोक्ताओं को उनकी आवश्यकतानुसार सूचना का प्रसार इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से करता है।
- ग्रन्थालय द्वारा अपने सूचना प्रसार माध्यमों को इलेक्ट्रॉनिक फार्मेट में परिवर्तन कर दिये जाने से

उपयोगकर्ता ग्रन्थालय में आये बिना भी नेटवर्किंग के माध्यम से अपनी आवश्यकतानुसार सूचना की प्राप्ति कर सकता है।²

आवश्यकता (Need)

एल्विन टफ्लर ने अपने ग्रन्थ "पावरशिफ्ट, 1990, में अनुमान लगाया था कि केवल अमेरिका में ही एक वर्ष में 1.3 ट्रिलियन प्रलेखों का उत्पादन/प्रकाशन हुआ। एक अनुमान के अनुसार विश्व में प्रतिवर्ष लगभग 50,000 जर्नल्स पीरियोडिकल्स का प्रकाशन केवल विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (S&T) के क्षेत्र में ही होता है। इसी प्रकार सूचना का विस्फोट अन्य विषयों में भी सामान्य रूप से होता है। इस स्थिति में ग्रन्थालय जो कि पहले से ही अन्य समस्याओं जैसे विशेषज्ञों, कर्मचारियों तथा वित्त की कमी से जूझता है, द्वारा समस्त पाठ्यसामग्री का संग्रह किया जाना असम्भव है।

आधुनिक सूचना युग में समाज के विभिन्न वर्गों में सूचना की माँग दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है जिसे ग्रन्थालय द्वारा एक ही छत के नीचे उपलब्ध कराने का दबाव भी बढ़ता जा रहा है। इसे आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक सुविधाओं तथा नेटवर्किंग के माध्यम से पूरा करने का विचार का विकास हुआ। इस प्रकार प्रौद्योगिकी की उन्नति ने ग्रन्थालय विज्ञान के पाँचवें नियम "ग्रन्थालय एक वर्धनशील संस्था है" अर्थात् ग्रन्थालय भवन का निर्माण आगामी 20 से 30 वर्षों की ग्रन्थों में वृद्धि को ध्यान में रख कर किया जाय, को भी बदल दिया है। आज एक फ्लॉपी, सी.डी. में सैकड़ों, हजारों ग्रन्थों की विषयवस्तु को अपने में समाहित करने की क्षमता होती है। आधुनिक ग्रन्थालयों द्वारा कम्प्यूटर एवं टेलीकम्यूनिकेशन (नेटवर्क) के माध्यम से उपयोगकर्ताओं की माँग के अनुसार अपेक्षित समय में सूचना उपलब्ध कराने का विचार विकसित हुआ और इस विचार ने ही प्रलेख रहित ग्रन्थालय (paperless library) की अवधारणा विकसित की।

संग्रह(Collection)

प्रलेखों के स्थान पर सी.डी./डी.वी.डी./फ्लॉपी/माइक्रोफिल्मिंग एवं हार्ड डिस्क में सूचना संग्रह, दृश्य-श्रव्य की संकल्पना के साथ ग्रन्थालय में आधुनिकतम इलेक्ट्रॉनिक सुविधाओं की माँग की जाने लगी है। पश्चिमी तथा विकसित देशों में ग्रन्थालय पूर्णतया स्वचालित होते हैं। ग्रन्थालय स्वचालन का आशय ग्रन्थालय के दैनिक कार्यों यथा संग्रहण, सूचीकरण, पत्रिकाओं का नियन्त्रण तथा आदान-प्रदान आदि क्रियाओं को कम्प्यूटर की सहायता से करना है। ग्रन्थालय सेवाओं में माइक्रोग्राफिक्स, डिजिटलीकरण आदि ने क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिया है। साहित्य जो ग्रन्थालय का सबसे ज्यादा

बढ़ने वाला भाग है को माइक्रोफिल्मिंग/डिजिटलीकरण द्वारा काफी संक्षिप्त रूप में संग्रह किया जा सकता है। इससे स्थान की समस्या का समाधान हो जाता है, लाखों ग्रन्थों की सामग्री कुछ ही निधानियों में संग्रहित किया जा सकता है।

कार्यप्रणाली (Working Pattern)

पश्चिम देशों में ग्रन्थालय पूर्णतया कम्प्यूटरीकृत हैं। अधिकांश ग्रन्थालय नेटवर्क में शामिल तथा अपने सदस्यों को नेटवर्किंग के माध्यम से घर बैठे ग्रन्थालय सेवार्थे प्रदान करते हैं।

1. कम्प्यूटर ग्रन्थालय स्वचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं एवं टेलीकम्यूनिकेशन, डिजिटल तकनीक तथा रिप्रोग्राफिक तकनीक ने ग्रन्थालय सेवाओं में क्रान्तिकारी परिवर्तन किया है। कम्प्यूटर तथा कम्प्यूनिकेशन (Communication) तकनीक ने ग्रन्थालय सेवाओं के दायरे को असीमित रूप दे दिया है। इसके परिणाम स्वरूप स्थानीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नेटवर्किंग द्वारा सूचना (Data) का आदान प्रदान किया जाने लगा है। विभिन्न प्रभावी नेटवर्क्स (Networks) ने एक बृहद ऑनलाइन डाटाबेस तथा डाटाबैंक्स का निर्माण करने में आश्चर्यजनक वृद्धि की है। ऑनलाइन नेटवर्क्स (Online Networks) के प्रभावस्वरूप ग्रन्थालय ने भौतिक संग्रह में बहुत कमी की है।
2. बृहद सूचना संग्रह उपलब्ध कराना।
3. एक लम्बे समय तक आवश्यकतानुसार सूचना का उपलब्ध होना।
4. उपयोगकर्ताओं द्वारा स्वयं सूचना की प्राप्ति।
5. उपयोगकर्ताओं, उपयोगकर्ता समूहों तथा अन्य ग्रन्थालय की सेवाओं को एकसाथ जोड़ना तथा एकरूपता प्रदान करना।

तकनीकियाँ (Techniques)

प्रलेख रहित ग्रन्थालय में सामान्यतः निम्नलिखित तकनीकियों का प्रयोग किया जाता है—

1. कम्प्यूटर तथा इनपुट डिवाइस के माध्यम से सूचना को डिजिटल स्वरूप में परिवर्तित किया जाता है।
2. स्टोरेज तकनीकी द्वारा सूचना का संग्रह (Storage) किया जाता है तथा आवश्यकतानुसार पुनर्प्राप्ति (Retrieval) की जाती है। इसमें मैग्नेटिक टेप तथा फ्लॉपी, सी.डी., डी.वी.डी. (Floppy, CD, DVD) स्मार्ट कार्ड आदि प्रमुख तकनीकियाँ हैं।
3. कम्प्यूनिकेशन (Communication) तकनीकी द्वारा विभिन्न प्रणालियों (नेटवर्किंग आदि) की सहायता से उपयोगकर्ताओं को सूचना प्रदान की जाती है।

लाभ(Benefits)

प्रलेख रहित ग्रन्थालय के निमाण के निम्नलिखित लाभ हैं :

1. वैश्विक सूचना प्राप्ति को प्रोत्साहित करना (उपलब्ध कराना)।
2. दुर्लभ ग्रन्थों को सुरक्षित रखने में सहायक जिससे उनका पुनः उपयोग सम्भव हो सकता है।
3. उपयोगकर्ताओं को उनकी आवश्यकतानुसार सूचना उपलब्ध होती रहती है जिसे वह स्वयं इसे संग्रहीत कर सकता है।
4. ग्रन्थ की एक प्रति को कितने ही उपयोगकर्ताओं द्वारा उपयोग, इससे वित्त का अन्यत्र उपयोग होता है।
5. ग्रन्थालयों में ग्रन्थों की रखने में अत्यधिक स्थान की आवश्यकता होती है। आधुनिक तकनीकों की सहायता से यह कमी पूरी हो जाती है।

भारतीय परिदृश्य (Indian Scenario)

पश्चिमी तथा कुछ यूरोपीय देशों में पूर्णतया स्वचालित ग्रन्थालय सेवाएँ प्रदान की जा रही हैं। डिजीटल ग्रन्थालय इन देशों में आम बात हो गयी है। इन देशों में प्रलेख रहित ग्रन्थालय की अवधारणा मूर्त रूप ले रही है। भारत में ग्रन्थालय सेवाओं में अत्यन्त सुधार हुआ है। आज बहुत से ग्रन्थालयों द्वारा आधुनिक तकनीकियों का प्रयोग कर स्वचालित ग्रन्थालय सेवाएँ प्रदान की जा रही हैं।

ग्रन्थालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में कम्प्यूटरीकरण की शुरुआत 1964 में इन्सडॉक द्वारा यूनियन कैललॉग के संकलन में मार्क टेप (MARKTape) के प्रयोग के साथ की गयी। इस प्रयास ने भारत को उन कुछ देशों के बराबर ला दिया था जो ग्रन्थालय स्वचालन के क्षेत्र में अग्रणी थे। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) के ग्रन्थालयों ने इस क्षेत्र में अत्यन्त प्रगति की है। यूजी.सी. द्वारा 1991 म इन्फ्लिबनेट (INFLIBNET) का विकास ग्रन्थालय स्वचालन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम था। यह नेटवर्क अनुसंधानकर्ताओं और शिक्षण कार्य से जुड़े लोगों की ग्रन्थालय और सूचना सम्बन्धी आवश्यकताओं में सहायता करने वाले एक बहुउद्देशीय सेवा नेटवर्क के रूप में कार्य कर रहा है। इसके द्वारा सूची पत्रक आधारित सेवाएँ, डाटाबेस, अभिलेख आपूर्ति सेवाएँ संग्रह विकास एवं संचार आधारित सेवाएँ प्रदान की जा रही हैं।

यद्यपि भारत में स्वचालित ग्रन्थालय सेवा बहुतायत उपलब्ध हो रही हैं परन्तु यह सामान्यतया कम्प्यूटर की सहायता से ही सम्भव हो रहा है। आज टेलीकम्प्यूनिकेशन तकनीकी एवं नेटवर्किंग का उपयोग विस्तृत रूप से नहीं हो पा रहा है। आज भी हमारे लिए नेटवर्किंग तथा ऑनलाइन सूचना की पुनर्प्राप्ति एक चुनौति है जो विकसित देशों में आमतौर पर दी जाने वाली सेवाओं में मानी जाती है।

भारत में कम्प्यूटरीकरण के मार्ग में ग्रन्थालयों तथा सूचना केन्द्रों द्वारा निम्नलिखित समस्याओं का अनुभव किया जाता है—

1. कम्प्यूटर प्रणाली को स्थापित करने में प्रारम्भिक लागत अधिक आती है जो सामान्यतः संस्थाओं की क्षमता से बाहर है।
2. सारणतया ग्रन्थालयकर्मी कम्प्यूटर की क्षमताओं तथा उसके ग्रन्थालय एवं सूचना कार्यों में उपयोग सम्बन्धी पर्याप्त योग्यता नहीं रखते हैं।
3. उपयोक्ता सामान्यतया इतना शिक्षित नहीं है कि वह कम्प्यूटर तथा अन्य नई तकनीकियों का विस्तृत उपयोग कर सके।

4. भारत में विभिन्न ग्रन्थालय कार्यों के लिए एक सामान्य प्रोग्राम (Package) उपलब्ध नहीं है जिसके कारण ग्रन्थालयों को अपनी स्वयं की अलग-प्रणालियाँ विकसित करनी पड़ती हैं परिणामस्वरूप नेटवर्किंग तथा सामान्य ग्रन्थालय सेवाओं में समन्वय नहीं हो पाता है।

5. भारत में ग्रन्थालय एवं सूचना कार्यों में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहाँ कम्प्यूटर का प्रयोग न किया गया हो परन्तु दुर्भाग्यवश इन ग्रन्थालयों के मध्य सहयोगिता तथा समन्वय का अभाव है जिसके कारण नेटवर्किंग सुविधा का लाभ नहीं मिल पाता है।

निष्कर्ष (Conclusion)

कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर के बेताज बादशाह बिल गेट्स ने अपने भारत दौर पर कहा था कि "भारत में बुनियादी चीज मानव-संसाधन है और इसके दोहन के लिए विश्वविद्यालयों, दूरसंचार कम्पनियों और सरकार को मिलकर काम करना होगा तभी भारत सूचना तकनीकी की दिशा में तरक्की कर सकता है।"

कुछ यूरोपीय तथा पश्चिमी देशों में ग्रन्थालयों द्वारा अपनी सेवाओं को आधुनिक तथा उच्चस्तरीय बनाने के लिए कम्प्यूटर तथा टेलीकम्प्यूनिकेशन तकनीकी का प्रयोग विस्तृत रूप से किया जा रहा है परिणामस्वरूप प्रलेखरहित ग्रन्थालय की अवधारणा जोर पकड़ रही है तथा यह दिन-पतिदिन व्यापक होती जा रही है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य म समिति शिक्षा, कम्प्यूटर की सामान्यतया प्रयुक्त भाषा, वित्तीय कमी, मूलभूत सुविधाओं (Infrastructure) का अभाव तथा ग्रन्थालयों का आपस में समन्वयक व सहयोग न होने के कारण ग्रन्थालयों द्वारा स्वचालित ग्रन्थालय सेवाएँ उपलब्ध कराने में बाधा आ रही है। यद्यपि कुछ क्षेत्रों में यथा इन्सडाक (INSDOC), भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) और कुछ विश्वविद्यालयीय ग्रन्थालयों द्वारा पूर्णतया स्वचालित सेवाएँ प्रदान की जा रही हैं।

शैक्षिक परिवेश में केन्द्रीय विश्वविद्यालय हैदराबाद देश का पहला डिजिटल ग्रन्थालय स्थापित करने की दिशा में अग्रसर हैं। केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद का ग्रन्थालय सनमाइको सिस्टम तथा वी.टी.एल.एस. (VTLS) सॉफ्टवेयर कम्पनी का संयुक्त उपक्रम है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भारत में ग्रन्थालय सेवाओं में आधुनिक तकनीकियों का व्यापक उपयोग हो रहा है तथा आगामी कुछ वर्षों में प्रलेख रहित ग्रन्थालय की अवधारणा का विकास हो सकता है।

संदर्भ ग्रन्थसूची

1. *Advanced Digital Library Resource Centres. Delnet News Letter.3 (L), Dec. 1996*
- 2- *Electronic Livrary at Work : Managing Information. Function, Maria. ASLIB JUNE 1997.*
3. MALAVAD (NM), ED.; *Digital Libraries : Dynamic Store House of Digitalized Information. New Delhi, New Age, 1996.*
4. *Digital Library. Employmetrn News. 12-18 Jan., 2002*
5. KUMAR (PSG) *Computerization of India Libraries. Delhi, B.R. Publication, 1987.*
6. KUMAR (PSG): *Fundamentals of Information Science. New Delhi, S Chand & Co., 1998.*